प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 34 – B * APR 2010 *

SN	Title	Min	Coding	Contents	
1	Apr 01. Mp3	42		गीता अ०२/३०:देह और देही २ही पदार्थ हैं, सभी नामरूप देह हैं व देही साक्षी चेतन सुखसिंधु दृष्टा है	a
2	Apr 02. Mp3	29		अध्यात्म रामायण-राम हनुमान संवाद- भ० द्वारा आत्मा अनात्मा परमात्मा का स्वरूप निरूपण – १	**
3	Apr 03. Mp3	40		गीता अ०२/३०: देह और देही २ ही पदार्थ हैं देह दृश्य एवं देही द्रष्टा है	b
4	Apr 04. Mp3	33		अध्यात्म रामायण-राम हनुमान संवाद- भ० द्वारा आत्मा अनात्मा परमात्मा का स्वरूप निरूपण – २	**
5	Apr 05. Mp3	36		गीता अ०२/३०:सत्-चेतन-सुखरूप द्रष्टा मेरा स्वरूप है एवं असत्-जड़-दुःखरूप दृश्य माया है,अज्ञान है	c
6	Apr 06. Mp3	*45*		हमारा स्वरूप सच्चि० अखंड परम प्रकाशक आत्म ज्ञान ज्योति है मायाकृत जगत की ५ज्योतियॉं प्रकाश्य हैं	Imp
7	Apr 07. Mp3	*37*		सीताजी द्वारा राम के नि०नि० एवं स्वयं/मूलप्रकृति का स्वरूप निरूपण राम तो पूर्ण अकाम अकर्म द्रष्टा हैं	**
8	Apr 08. Mp3	33		गीता अ०२/३०-३८: अर्जुन तेरा स्वरूप सच्चिदानंद है,देह से वर्णाश्रमानुसार स्वधर्म पालन ही कर्तव्य है	**
9	Apr 09. Mp3	37		सीताजी द्वारा राम के नि०नि०का स्वरूप निरूपण जगत पूर्ण पुरुष राम की छाया रूप माया का परिणाम है	Imp
10	Apr 10. Mp3	37		गीता अ०२/३०: देह और देही २ ही पदार्थ हैं देह असत् जड़ छाया एवं देही सत्य ज्ञान रूप पूर्णपुरुष है	**
11	Apr 11. Mp3	36		गीता अ०२/३०-३८:अज्ञान हमारे ज्ञानस्वरूप का नाश नहीं कर सकता,जगत अज्ञान-प्रकृति-माया का कार्य है	**
12	Apr 12. Mp3	26		गीता अ०२/३०: देह और देही २ ही पदार्थ हैंदेह दृश्य एवं देही द्रष्टा हैदेह भी मैं हूँ देही भी मैं हूँ	d
13	Apr13. Mp3	30		देह और देही २ ही पदार्थ हैं देही सच्चिदानंद द्रष्टा है व देह असत्-जड़-दुःखरूप दृश्य माया है	**
14	Apr 14. Mp3	27		कल्याण स्वरूप मैं सच्चिदानंद ही हूँ,मेरे २रूप हैं-व्यापक नि०नि० एवं स०सा०: राम कृष्ण तथा विश्वविराट	*1*
15	Apr 15. Mp3	49		कल्याण स्वरूप मैं सच्चिदानंद ही हूँ,मेरे २रूप हैं-व्यापक नि०नि०द्रष्टा एवं स०सा०विश्वरूप दृश्य मेरी माया है	*2*
16	Apr 16. Mp3	26		सत्य ज्ञान आनंद स्वरूप तो मैं ब्रह्म ही हूँ मेरी माया रूपी शक्ति ही जगत का रूप धारण कर लेती है	**
17	Apr 17. Mp3	33		गीता अ०२/३०:देह-देही २पदार्थ हैंदेही सच्चि०स्वरूप अकर्म द्रष्टा मात्र है,देहसे स्वधर्म पालन ही तेरा कर्तव्य है	e
18	Apr 18. Mp3	33		गीता अ०२/३०:देह-देही २ पदार्थ हैं देह दृश्य एवं देही सच्चि० द्रष्टा है चार प्रकार के भक्त निरूपण	f